इंटरनेशनल कम्युनिस्ट करन्ट

साम्राज्यवादी जंग के खिलाफ!
शान्तिवादी भ्रमों के खिलाफ!
सभी देशों में वर्ग संघर्ष!

एक बार फिर मध्यपूर्व आतंक की गिरफ्त में है। एक बार फिर इराक पर बमों की आग बरसाई जा रही है। एक ओर 'सभ्य' ताकतें पहले ही भुखमरी की शिकार आबादी पर मौत तथा बदहाली बरपा कर रही हैं। दूसरी ओर सारी दुनिया को झूठों की बाढ में डुबोया जा रहा है। ताकि जंग उचित ठहरायी जा सके। और जंग के हर सच्चे विरोध को विकृत तथा भ्रमित किया जा सके।

अमेरिका तथा ब्रिटेन झूठे हैं!

वे कहते हैं यह जंग जनसंहार के हथियारों के खात्मे के लिए है। ***पर यह जनसंहार के हथियारों द्वारा लडी जा रही जंग है***। इसके मुख्य मकसदों में से एक है यह प्रदर्शित करना कि अमेरिका के पास कितने भारी तथा विनाशक हथियार हैं ताकि कोई भी अमेरिकी नेतृत्वं को चुनौती देने की जुर्रत ना कर पाये। बडी बात यह है कि सद्दाम के रसायनिक हथियार अस्सी के दशक में अमेरिका तथा ब्रिटेन द्वारा सप्लायी किये गए थे। उन्होंने ही इरान-इराक युद्ध में इनके इस्तेमाल में सद्दाम की सहायता की थी। और 1988 में जब सद्दाम ने कुर्दों पर विषैली गैस बरसायी तो वे चुप रहे।

वे कहते हैं यह जंग आतंकवाद के खिलाफ है। पर तमाम राष्ट्र -न सिरफ अफगानिस्तान तथा इराक जैसे असफल राज्य - जंग के औजार के तौर पर आतंकवाद का इस्तेमाल करते हैं। ब्रिटेन उत्तरी आयरलैण्ड में अपने घिनोने कृत्यों के लिए राजशाही गिरोहों का इस्तेमाल करता रहा है। अमेरिका के मौजूदा 'दुश्मन नंबर एक' बिन लादेन को सीआईए ने अफगानिस्तान में रुस से लडने के लिए ट्रेन किया था। उससे भी बदतर, जो राज्य आतंकवादी खतरे संबंधी दुनिया को भाषण देते हैं वे जंग की लामबन्दी के लिए समर्थन जुटाने खातिर सवयं अपनी आबादी पर अतंकवादी हमलों का इस्तेमाल करने से नहीं चूकते। ऐसे सबूत बढते जा रहे हैं कि अमेरिकी धरती पर अल कायदा के हमलों की अमेरिका को पूर्व जानकारी थी पर उन्हें रोकने के लिए उसने कुछ नहीं किया।

फ्रांस, जर्मनी और रुस भी जंगबाज हैं!

ये झूठ आज अधिकाधिक नंगे होते जा रहे हैं। पर वे देश तथा राजनेता जो 'युद्व के खिलाफ' होने का दावा करते हैं और भी खतरनाक झूठ फैला रहे हैं।

वे कहते हैं जंग गलत है चूंकि यह यूएन द्वारा स्वीकृत नहीं। पर 1991 का युद्व जिसमें लाखों इराकी मारे गए और जिसने सद्दाम को उसके खिलाफ बगावत करने वाले नागरिकों का नरसंहार करने की अनुमति दी, वह यूएन द्वारा स्वीकृत एक 'कनूनी' जंग थी। यूएन कोई अर्न्तराष्ट्रीय न्याय की रक्षक नहीं बल्कि चोरों का एक अड्डा है जहां महाशक्तियां अपने घिनोने षडयन्त्रों तथा प्रतिद्वन्द्वितांओं का खेल खेलती हैं।

आज शिराक, श्रडेर तथा पुतिन 'शन्तिवादी' होने का नाटक करते हैं। पर अमेरकिा विरोधी 'गठजोड' के शन्तिवादी दावे एक फ्राड हैं - ऐन इसी पल अपने साम्राज्यवादी स्वार्थों की रक्षा के लिए फ्रांस एवरी कोस्ट में सैनिक कार्यवाही कर रहा है। और रवांडा में हूतू मृत्यु दस्तों को सशत्र तथा ट्रेन करने में मुख्या भूमिका फ्रांस की ही थी। बाल्कान में एक दशक तक चलने वाले युद्व को जर्मनी ने ही भडकाया था - क्रोश्या तथा स्लोवीनिया को युगोस्लाविया से अलग होने के लिए उकसा कर ताकि मध्यसागर तथा मध्यपूर्व की ओर अपने पैर पसारे जा सकें। रुसी सेनाएँ आज भी चेचनियां को बरबाद तथा उसकी आबादी का संहार कर रही हैं।

पूँजीवाद साम्राज्यावाद है!

अमेरिकी जंगी मंसूबों में रोडा अटकाने में प्रयासरत्त रष्ट्र अपने राष्ट्रीय तथा साम्राज्यवादी स्वार्थों की खातिर ही यह कर रहे हैं। वे जानते हैं के आतंकवाद के खिलाफ जंग का असली निशाना सद्दाम अथवा विन लादेन नहीं बल्कि वे सवयं हैं।

अमेरिका अपनी साम्राज्यवादी रणनीति संबंधी कुछ भी छिपता नहीं है। अस्सी के दशक में रुसी गुट के पतन के समय से, अमेरिका ने कसम खा रखी है कि अपनी भीमकाय सैनिक बढत का प्रयोग करके वह किसी भी नई महाशत्ति के जन्म को रोक देगा। 1991 से तमाम बडी सैनिक कार्यवाहियों का यही लक्ष्य रहा है- 1991 में खाडी युद्व,1999 में कोसोवो, 2001 में अफगानिस्तान। पर हर कार्यवाही ने छोटी-बडी ताकतों द्वारा उसकी अथारटी को पेश चुनौती को बढाया है। और इसने अमेरिका को और भी बडे पैमाने पर अपनी रणनीति पर चलने को प्रेरित किया है। उसका इरादा अब मध्य एशिया तथा मध्यपूर्व का सीधा नियन्त्रण हासिल करने तथा कार्यवाही क्षेत्र सुदूरपूर्व तक फैलाने का है। अपने मुख्य प्रतिद्वन्दियों - खासकर फ्रांस तथा जर्मनी - के विरोध के रुबरु उसका लक्ष्य अब यूरोप की घेराबन्दी तथ यूरोपीय ताकतों तथा जापान के खिलाफ मध्यपूर्व के तेल के इस्तेमाल के सिवा कुछ नहीं। फ्रांस, जर्मनी तथा शेष प्रतिरक्षात्मक हैं, पर वे अभी भी साम्राज्यावादी खेल में सक्रिय खिलाडी हैं।

पूँजीवादी राज्यों की यूँ व्यवहार करने की बजह उनकी शैतानियत अथवा उनके नेताओं की मूर्खता नहीं। इसकी बजह यह है कि 1914 से विश्व पूँजीवाद का अर्थ रहा है विश्वयुद्व। समूचे विश्व को आपस में बांटने के बाद, विभन्न महाशक्तियां अपने प्रतिद्विन्दयों के बाजार तथा साधन छीने बिना शन्तिपूर्ण तरीके से नहीं फैल सकतीं। आज हर देश साम्राज्यवादी है। और बीसवीं तथा इक्कीसवीं सदी की तमाम जंगे साम्राज्यवादी जंगें रही हैं - इसीमें शामिल हैं 1939-45 की तथाकथित फासीवाद विरोधी जंग, तथाकथित 'राष्ट्र मुक्ति युद्व' तथा विन लादेन द्वारा प्रचारति 'धर्म युद्व'।

पूँजीवाद जंग के बिना जिंदा नहीं रह सकता। यह इस बात का सबूत है एक लंबे समय से पूँजीवाद मानवीय प्रगति की राह में एक रुकावट है। पूँजीवाद का अस्तित्व आज मानव जाति के अस्तित्व के लिए एक खतरा बन गया है।

शान्तिवादी भ्रमों के खिलाफ!

फरवरी में लाखों लोग उन प्रदर्शनों में शामिल होने सडकों पर उतर आए जिन्होंने घोषणा की कि 'युद्व रोकने' की यही एक राह है। पर जंग छिड गई है। न तो यूएन में वीटो, न प्रजातन्त्र तथा शन्ति के सुन्दर आदर्शों की गुहार जंगी मशीन को दहाडते हुए आगे बढने से रोक पायी हैं।

साम्राज्यवादी टकरावों की एक सदी दिखाती कि शन्तिवाद पूँजीवाद को जंग पर जाने से कभी नहीं रोक सकता। वास्तव में, यह सदा तमाम तरह के भ्रम फैला कर युद्व की राह साफ करने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है :

- कुछ पूँजीवादी राज्यों, कुछ पूँजीवादी पार्टियों के अथवा यूएन के शन्तिपूर्ण हितों संबंधी भ्रम;
- ये भ्रम कि शन्तिपूर्ण, कानूनी तरीकों से युद्व का विरोध किया जा सकता है;
- ये भ्रम कि 'प्रजातन्त्र' जंगी उन्माद के विपरीत है, कि 'जनइच्छा' नेताओं को युद्व पर जाने से रोक सकती है;
- ये भ्रम कि पूँजीवाद को मिटाये बिना दुनिया में एक दिन शन्ति कायम हो सकती है।

ये भ्रम पूँजीवाद में निहित जंगी ड्राइव के किसी भी सच्चे विरोध को निहत्था ही कर सकते हैं। और भी बदतर, वे आबादी को जंग में भर्ती के लिए तैयार करते हैं : चूँकि अगर एक पूँजीवाद 'अच्छा', 'शन्तिप्रिय' तथा 'जनहितों का सम्मान' करने वाला है, तब यह लाजिमी है कि हम 'बुरे', 'जंगबाज', 'जनवादविरोधी' पूँजीवाद से इसकी रक्षा के लिए हथियार उठाएँ। इसी लिए पूँजीवाद की तमाम राजनीतिक ताकतें, खासकर तथाकथित 'वामपंथ' की तमाम पार्टियां, सुनियोजित तरीके से इन भ्रमों को हवा देती हैं।

साम्राज्यवादी युद्व के खिलाफ - अर्न्तराष्ट्रीय वर्ग संघर्ष!

पूँजीवादी रज्यों के बीच जंग का विरोध केवल वही आंदोलन कर सकता है जो किन्हीं राष्ट्रीय हितों की रक्षा नहीं करता- मजदूर वरग के अर्न्तराष्ट्रीय संघर्ष द्वारा।

हर जंग में शोषित बहुमत ही उच्चतम कीमत अदा करता है - वह चाहे तोप की आग समक्ष खडे सैनिकों तथा नागरिकों के रुप में हो अथवा उत्पादकों और उपभोगतांओं के रुप में, जिन्हें राष्ट्रीय हित में अधिक खटने और कम खाने के लिए कहा जाता है।

पर मजदूर वर्ग जंग का मात्र निष्क्रिय शिकार नहीं। यह 1917-18 की जन हडतालें तथा बगावतें ही थी जिन्होंने पहले विश्वयुद्व का अन्त किया। उस क्रांन्तिकारी लहर की हार के बाद ही पूँजीवाद दूसरे विश्व नरसंहार का श्रीगणेश कर पाया। और जब 1960 के दशक के अन्त में मजदूर वर्ग फिर इतिहास मंच पर प्रगट हुआ, उसके संघर्षों ने ही एक नए विश्वयुद्व का रास्ता रोके रखा है। मौजूदा टकरावों के सद्दाम जैसे बलि के बकरों के खिलाफ 'पुलिस' कार्यवाही का रुप लेने की बजह भी यही है - आज पूँजीवाद मजदूर वर्ग को मुख्य साम्राज्यवादी ताकतों के बीच सीधे टकराव के लिए लामबन्द करने की स्थिति में नहीं।

मजदूर वरग हमारा शोषण करने वाली व्यवस्था से टकराव से नहीं बच सकता। जंग की ओर पूँजीवाद की उडान का स्रोत्र - खुशहाली विकसित कर पाने में उसकी अक्षमता, उसका संकट - पूँजीवाद को मजदूर वर्ग के जीवन स्तर वर अन्तहीन हमलों की ओर, बढते शोषण, बढती बेरोजगारी तथा सामाजिक सुविधाओं में कटौती की ओर लेजाता है। युद्व की ओर कूच इन हमलों को और भी तेज कर देंगे तथा शोषितों से बढते बलिदान मांगेंगे। इसी लिए, संकट के असरों के खिलाफ जरुरी तथा अवश्यंभावी संघर्ष युद्व के खिलाफ संघर्ष भी है।

आज मजदूर वर्गीय संघर्ष मात्र रक्षात्मक संघर्ष ही हो सकते हैं। पर वे एक आक्रमक क्रान्तिकारी संघर्ष के, समूचे पूँजीवादी सिस्टम के खिलाफ वर्गयुद्व के बीज अपने में समेटे हैं। केवल यह संघर्ष ही पूँजीवादी जंगी मशीन का विनाशा कर सकता है। केवल वही मानवता को उस विश्व समुदाय की ओर ले जा सकता है जो साम्राज्यवादी जंगों को तथा राष्ट्रीय सरहदों को इतिहास के कूडेदान में फेंक देगा।

- ***हमारे तमाम शोषकों संग किसी भी एकजुटता के खिलाफ - फिर वे चाहे इस युद्व के खिलाफ हों जा पक्ष में, वे चाहे अमेरिकी, ब्रिटिश व स्पेनिश हों जा फ्रेंच, जर्मन, चीनी, रुसी अथवा इराकी!***
- ***विश्व मजदूर वरग के इंटरनेशनल भाईचारे के लिए!***

इंटरनेशनल कम्युनिस्ट करन्ट, मार्च २००३

यह परचा निम्न देशों में बांटा जा रहा है:
ब्रिटेन, अमेरिका, मेक्सीको, वेन्जुएला, फ्रांस, स्पेन, इटली, हालैण्ड, बेल्जियम, जर्मनी, स्विटजरलैण्ड,भारत, रुस, आस्ट्रेलिया
हमारा पता: **PBN. 25, NIT, FARIDABAD, HARYANA** वेबसाइट: **www.internationalism.org**